



आदम को बनाने के तुरंत बाद, अल्लाह ने उनकी पत्नी हव्वा को बनाया। अल्लाह ने सभी मनुष्यों को उनसे पैदा किया (क़ुरआन 49:13)। हव्वा को आदम की पसली से बनाया गया था। पैगंबर मुहम्मद (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने कहा, "महिलाओं की अच्छी देखभाल करें, क्योंकि (पहली) महिला एक मुड़ी हुई पसली (आदम की) से बनाई गई थी, और एक पसली का सबसे घुमावदार हिस्सा उसका है उपरी सरि होता है। यदि आप उसे सीधा करने पर जोर दोगे, तो आप उसे तोड़ दोगे और यदि आप उसे छोड़ दोगे, तो यह मुड़ा ही रहेगा। इसलिए महिलाओं का अच्छे से ख्याल रखें।" (बुखारी)



## आदम के बच्चे

आदम को पैदा करने के बाद, अल्लाह ने उनके सभी वंशजों को उनकी रीढ़ की हड्डी से बनाया (क़ुरआन 7:172)। पैगंबर मुहम्मद ने कहा, "जब अल्लाह ने आदम को बनाया, तो उसने आदम की पीठ की हड्डी को हटा दिया, उसमें से अल्लाह आदम की संतान के प्रत्येक व्यक्ति को पुनरुत्थान के दिन तक पैदा करेगा।"<sup>[1]</sup>

## अल्लाह ने स्वर्गदूतों को आदम को सजदा करने का आदेश दिया

आदम में प्राण फूंकने के बाद अल्लाह ने स्वर्गदूतों को आदम का सजदा करने का आदेश दिया। अल्लाह ने उनसे कहा,

**“तो जब मे उसे पूरा बना लूं और उसमें अपनी आत्मा फूंक दूं, तो उसके लिए सज्दे में गरि जाना।”**

**(क़ुरआन 15:29, 38:72)**

आदम को जीवन देने के बाद, अल्लाह ने स्वर्गदूतों को आदम के सामने सजदा करने का आदेश दिया,

**“और जब हमने स्वर्गदूतों से कहा: आदम को सज्दा करो” (क़ुरआन 2:34, 17:61, 18:50, 20:116)**

जब अल्लाह ने स्वर्गदूतों को आदम का सजदा करने का आदेश दिया, तो उनमें शैतान (या अरबी में इबलीस) भी था। स्वर्गदूतों ने तुरंत सजदा किया, लेकिन इबलीस ने इनकार कर दिया (क़ुरआन 2:34, 20:116, 15:30-31)। उसका पहला पाप अल्लाह के सज्दे के आदेश की अवज्ञा करना था। इबलीस कभी स्वर्गदूत नहीं था (क़ुरआन 18:50); वह एक जनिन था जो स्वर्गदूतों के बीच रहता था। उसने

अपने व्यवहार के लिए पछतावा और पश्चाताप नहीं किया। अल्लाह कहता है,

**“तो इब्लीस के सवाि सबने सज्दा किया, उसने इन्कार तथा अभिमान किया और काफ़रीं में से हो गया।” (क़ुरआन 2:34)**

अल्लाह ने उसे पश्चाताप करने का मौका दिया; हालांकि, इब्लीस अवज्ञा और विद्रोह में डूब गया था। अपने अहंकार को सही ठहराने के लिए, शैतान ने कहा कि वह आदम से बेहतर है क्योंकि आग मट्टी से बेहतर होती है।

अल्लाह ने इब्लीस को सजा के तौर पर स्वर्ग से निकाल दिया।

इब्लीस ने माना कि वह अपने पूर्ण अविश्वास और अवज्ञा के लिए तत्काल दंड का पात्र है, लेकिन उसने अनुरोध किया कि उसकी सजा को न्याय के दिन तक स्थगित कर दिया जाए। अल्लाह ने अपने महान ज्ञान से उसके अनुरोध को स्वीकार कर लिया।

इब्लीस ने मनुष्यों को गुमराह करने की अपनी दुष्ट योजना की घोषणा की। उसने अल्लाह के सामने घमंड से घोषणा की,

**“(उसने (इब्लीस ने) कहा: तो जसि प्रकार तूने मुझे कृपथ किया है, मैं भी तेरी सीधी राह पर इनकी घात में लगा रहूंगा। फिर उनके पास उनके आगे और पीछे तथा दायें और बायें से आऊंगा और तू उनमें से अधिकतर को (अपना) कृतज्ञ नहीं पायेगा।” (क़ुरआन 7:16-17)**

इब्लीस ने अपने दुर्भाग्य के लिए अल्लाह को दोषी ठहराया, भले ही अल्लाह ने उसकी पसंद की स्वतंत्रता को नहीं छीना था। अल्लाह की बुद्धि ने तय किया कि इब्लीस इंसानों के लिए परीक्षण हो और उसे इंसानों पर असाधारण अधिकार दिए, लेकिन इसकी सीमा यह है कि वह अल्लाह के सच्चे सेवकों को वश में नहीं कर पाएगा।

अल्लाह ने इब्लीस को अपनी योजना पर अमल करने की अनुमति दी। जब वह अपनी दुष्ट योजना पूरी कर लेगा, तो वह अपने जन्न और मनुष्य अनुयायियों के साथ नरक में रहेगा। (क़ुरआन 7:18).

## आदम और हवा स्वर्ग में

अल्लाह ने आदम और हवा को स्वर्ग में रहने दिया, जो सबसे अच्छा निवास है। अल्लाह ने उन्हें बना किसी रोक-टोक के इसके इनामों का आनंद लेने की अनुमति दी। हालांकि, अल्लाह ने उन्हें एक

वशिष्ट फल खाने से मना किया,

**“और हमने कहा: हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो तथा इसमें से जसि स्थान से चाहो, मनमानी खाओ और इस वृक्ष के समीप न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे।” (कुरआन**

**2:35)**

जैसे ही आदम और हव्वा ने स्वर्ग में रहना शुरू किया, शैतान ने उन पर अपनी चालाकी से छल किया। दोनों मासूम थे और झूठ और धोखे के बारे में नहीं जानते थे। शैतान ने अल्लाह की झूठी शपथ ली और उनकी मासूमियत का इस्तेमाल अपने फायदे के लिए किया। शैतान ने उन्हें सुझाव दिया कि वे स्वर्गदूतों की तरह हो सकते हैं या हमेशा के लिए स्वर्ग में रह सकते हैं। आदम और हव्वा अपनी इच्छा के आगे झुक गए और शैतान की चाल में पड़ गए और नषिदिध पेड़ से खा लिया। जैसे ही उन्होंने खाया, उनके नज्जी अंग उजागर हो गए (कुरआन 2:36)। अवज्ञा का एक तत्काल परिणाम तबका के आध्यात्मिक कपड़ों को उतारना है, इसलिए उनके नज्जी अंगों को ढकने वाले वस्त्रों को छीन लिया गया था।

उन्हें उनके नज्जी अंगों को ढकने वाले भौतिक वस्त्रों को छीनने की सजा दी गई थी।

शैतान ने पहले हव्वा को बहकाया था और फिर उसने आदम को नषिदिध पेड़ से खाने के लिए मना लिया था (बुखारी और मुस्लिम में वर्णन के आधार पर)।

जब शैतान ने उन दोनों को अल्लाह की अवज्ञा करने के लिए बहकाया, तो उन्हें स्वर्ग से निकाल कर पृथ्वी पर रहने के लिए भेज दिया गया था, ताकि उनकी मृत्यु हो सके और पुनरुत्थान के दिन उठाया जा सके।

जैसे ही आदम और हव्वा को अपने पाप की गंभीरता का एहसास हुआ, उन्होंने इसका पछतावा किया और अल्लाह से पश्चाताप करना चाहते थे। अपने पाप के प्रति उनका रवैया शैतान से बिल्कुल अलग था। शैतान ने अपनी अवज्ञा के लिए अल्लाह को दोषी ठहराया था और पछतावा या पश्चाताप करने से इनकार कर दिया था।

अल्लाह ने उन्हें पश्चाताप करने के वशिष्ट शब्द सखिाकर पश्चाताप का मार्ग दिखाया। आदम और उसकी पत्नी द्वारा कहे गए शब्द थे,

**“दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हमने अपने ऊपर अत्याचार कर लिया और यदत्तू हमें क्षमा तथा हमपर दया नहीं करेगा, तो हम अवश्य ही नाश हो जायेंगे।” (कुरआन 7:23)**

पश्चाताप करने का सबसे अच्छा तरीका पाप और अधर्म को स्वीकार करना है। इस तरह अल्लाह ने आदम और हव्वा को अपना पश्चाताप व्यक्त करना सिखाया।

अल्लाह ने उनका पश्चाताप स्वीकार किया और उनसे कहा कि इंसानों को धरती पर वास करना चाहिए। नेक काम करने वालों को ही स्वर्ग में जाने दिया जाएगा।

---

फुटनोट:

[1] तरिमाज़ी

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/hi/articles/327>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।